

Jeevan Vidya Workshop/Shivir

Do You Ever Wonder?

What is my purpose? What is Happiness? What are relationships? Can relationships be harmonious? What are values? What is love? What causes conflicts and misunderstandings? Is making money my only aim in life? What is Equality, Justice, Education? What is happening to our natural resources? What is my role? Is society needed? Why are there so many laws, rules, regulations? Can we survive without each other? Why is there exploitation in society? What am I? What is this world? What is life? What are these planets, stars, galaxies? Are we alone in the universe? What is the universe?

The human quest is to seek a happy, secure, harmonious and sustainable way of life. Happiness at the level of the individual, security at the level of family, harmony at the level of society and sustainability at the planetary level.

What do you aspire for?

At present, this quest has generally been reduced to acquiring wealth and influence over others. However, the fact remains that no matter how much wealth or influence one acquires, fulfilment continues to elude us as individuals.

What is your quest?

Presently, the pursuit of wealth & power is causing deterioration of self (mental health, physical health), relationships (unfulfilled expectations) resulting in a society which is constantly fighting/ exploiting within itself. In the mainstream we have accepted this exploitation as inevitable; harmony is not even a consideration anymore.

What do you think, is this a problem?

The impact of this destructive way of living is all around and it affects one and all, but none of us wants this destruction. Despite none of us desiring this destructivity in our living, we are all unfortunately, knowingly or unknowingly, participating in it. And at the same time hoping for harmony and sustainability.

What do you think, do we need to do considerably better as a society?

Is this what we want? Is there any alternative to this? Can we humans live in harmony with each other? Can we nurture our relationships, families, communities and our society? Is there a possibility for a sustainable lifestyle? Many of us are asking these questions; some are even attempting to answer them and some are attempting to present solutions to such related issues at various levels.

If such questions/issues concern you or interest you, then this Jeevan Vidya Introductory Course is for you.

Note: Living inspired by Jeevan Vidya is a family based, society-based, robust, responsible, interactive and harmonious living.

	Current Challenges	Possibilities
Individual	Boredom, confusion, loneliness, disillusionment, depression, aggression...	Meaningfulness, clarity, rootedness, purposefulness, self confidence, calmness
Family / Relationships	Unfulfilled expectations, interference, betrayal, injustice, dominance, abuse, discord, money problems	Fulfilment of responsibilities, mutual support, trust, justice, inspiration, nurturing, cordiality, prosperity
Society	Fear, hate, exploitation, inequality, unemployment, poverty, struggle, war	Security, respect, complementarity, equality, self employment, development, cooperation, peace
Planet	Pollution, climate change, global warming, air, water food scarcity crisis	Clean air-water-food, climate reliability, Global balanced cycles of minerals, plants, animals, temperature, precipitation, wind, for the blooming of the planet with humans.

What is Jeevan Vidya?

- Jeevan Vidya (JV) is a **new discovery for in hman understanding**, a proposal for understanding coexistence and living in accordance with coexistence as defined in a philosophy called **Coexistential Philosophy** (*Saha-astitva-vaad, Madhyasth Darshan*)
- The introductory JV course introduces one to the basic concepts of JV regarding Self, Relationships, Society, Nature and the principle of coexistence governing all of these. With these basic concepts one is able to understand the structure, purpose, responsibilities, expectation, fulfilment of various aspects of life.
- JV proposes that each person is capable of understanding based living and in absence of proper understanding they live according to their assumptions.
- According to JV, understanding is that which takes one towards harmony in self and at the same time harmony with others.
- If harmony is absent then it is just an 'assumption' not understanding, which needs to be examined. In fact, education is the journey from assumptions towards understanding.
- Those of us who have engaged with JV have slowly developed a 'worldview' that helps in living a more harmonious life.

What is Jeevan Vidya Introductory Course?

- It is usually a Seven day residential course.
- The facilitator puts forth proposals for the participants to examine.
- Clarifications on the proposals introduced during sessions are welcome and addressed.
- This course is free of Do's & Don'ts therefore there is no preaching.
- This course is not associated with any religion, sect or commune.
- Typically, the classroom sessions last for over 6 hours, so the participants need to be mentally prepared for that.
- Besides the above-mentioned formal interaction time, participants are free for informal interactions.
- There are no 'mandatory rules' in this course. Participants are suggested to maintain civility, cooperativeness and politeness with each other, so as to nurture a learning and contemplating environment within the participant group.

More info at www.jeevanvidya.info

जीवन विद्या परिचय शिविर

क्या आप कभी सोचते हैं कि:

मेरा प्रयोजन क्या है? जीवन क्या है? परिवार, संबंध आदि क्या हैं, क्यों है? क्या संबंधों में तालमेल हो सकता है? मेरी ज़िम्मेदारी क्या है? मूल्य, नैतिकता आदि क्या हैं? मैत्री, स्नेह, प्रेम (प्यार) क्या है? मतभेद और ग़लतफ़हमी क्यों होते हैं? क्या मेरा/हमारा लक्ष्य केवल पैसा कमाना है? समता, न्याय, शिक्षा सही अर्थों में क्या है? परिवार में, समाज में मेरी भूमिका क्या है? क्या, हमें सामाजिक होने-रहने की आवश्यकता है? इतने कानून, नियम, अधिनियम क्यों हैं? क्या हम एक दूसरे के बिना रह सकते हैं? समाज में शोषण क्यों है? ये संसार क्या है? प्रकृति में खनिज, वनस्पति, जीव-जानवर की भूमिका क्या है? ग्रह-गोल-सितारे क्या हैं? क्या, हम इस ब्रह्माण्ड में अकेले हैं? अस्तित्व है क्या?

स्वभाविक रूप में मानव एक खुशहाल, सुरक्षित, सामंजस्यपूर्ण ज़िंदगी जीना चाहता है। स्वयं में सुखी, परिवार में सुरक्षित, समाज में सामंजस्य, व धरती में प्राकृतिक अक्षुण्णता। **आप कैसा जीना चाहते हैं?**

आज ये आकांक्षा केवल धन कमाने और दूसरों को प्रभावित करने, नियंत्रित करने तक सीमित है। लेकिन सच तो यह है कि हम कितना भी धन कमा लें, दूसरों को प्रभावित कर लें, इसमें तृप्ति तो नहीं मिलती है। **क्या आप को तृप्ति की तलाश है?**

वर्तमान स्थिति तो यह है कि धन और यश की इस दौड़ में स्वयं का (शारीरिक व मानसिक स्थिति का) एवं संबंधों का ह्रास ही हो रहा है, जिसके फलन में समाज में कलह, झगड़े व शोषण है। लगता है कि, मुख्य धारा में हमने इस स्थिति को अपरिहार्य मान लिया है; सामंजस्यता तो अब विचारणीय मुद्दा ही नहीं रहा। **आपको क्या लगता है, क्या ऐसा है?**

ऐसा जीने का विनाशकारी परिणाम चारों ओर दिख रहा है, परंतु हम में से कोई भी इस विनाश को चाहता तो नहीं है। बावजूद इसके, दुर्भाग्य से हम सब जाने-अनजाने या विवशता पूर्वक इसमें भागीदार भी हैं और अनुमोदन भी कर रहे हैं। विडम्बना यह है कि, साथ ही सामंजस्य और स्थिरता की भी आशा कर रहे हैं। **आपको क्या लगता है? क्या आप भी बेहतर समाज की कामना करते हैं?**

जो चल रहा है, जो हम घटित करा रहे हैं, क्या हम यही चाहते हैं? क्या हमारे पास इस सबका कोई विकल्प हो सकता है? क्या मानव एक दूसरे के साथ तालमेल पूर्वक जी सकते हैं? क्या हम अपने संबंधों, परिवारों, समुदायों, समाज को पोषित कर सकते हैं? क्या प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीने की जीवनशैली संभव है? कई लोग इस प्रकार के उत्तर खोज रहे हैं; कुछने उत्तर पाए भी हैं व कई ऐसे भी हैं जो अलग-अलग स्तर पर इनके समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि आप भी इस प्रकार के मुद्दों से जूझते हैं, तो जीवन विद्या परिचय शिविर आपके सामने समाधान के अर्थ में एक प्रस्ताव है।

नोट: जीवन विद्या के आधार पर जीना परिवार मूलक, समाज-मूलक, प्रकृति में संतुलन पूर्वक खुशहाली; मज़बूती; जिम्मेदारी के साथ जीने की जीवनशैली है।

	चुनौतियां	अवसर
व्यक्ति	बोरियत, भ्रम, अकेलापन, मोहभंग, अवसाद, आक्रामकता	अर्थपूर्णता, स्पष्टता, जड़ता, उद्देश्यपूर्णता, आत्मविश्वास, शांति
परिवार/संबंध	अतृप्त अपेक्षाएं, हस्तक्षेप, विश्वासघात, अन्याय, शोषण, कलह, विपन्नता	जिम्मेदारी का निर्वाह, आपसी सहयोग, विश्वास, न्याय, पोषण, सौहार्द, समृद्धि
समाज	भय, घृणा, द्रोह-विद्रोह, असमानता, बेरोज़गारी, सामाजिक शोषण, युद्ध, शासन	सुरक्षा, सम्मान, पूरकता, समता, स्वावलंबन, सामाजिक सहयोग, सामरस्यता, व्यवस्था
धरती	प्रदूषण, ऋतु असंतुलन, धरती का ताप बडना, हवा-जल-आहार का अभाव एवं विषमताएँ।	स्वच्छ वातावरण, ऋतु संतुलन, धरती में ताप नियंत्रण, खनिज-वनस्पति-पशु-पक्षी-तापमान-वर्षा-हवा के संतुलित चक्र जिससे धरती मनुष्य के साथ फले-फूले

जीवन विद्या क्या है?

- जीवन विद्या, मध्यस्थ दर्शन पर आधारित सहअस्तित्व की अवधारणा को समझने व सहअस्तित्व आधारित जीने का प्रस्ताव है।
- परिचय शिविर में जीवन विद्या के मूल अवधारणाओं का परिचय मिलता है - स्वयं, संबंध, समाज, प्रकृति, और इन सबके मूल में सहअस्तित्व नियम का परिचय मिलता है। इन मूल अवधारणाओं के आधार पर हम जीने के आयामों में व्यवस्था, प्रयोजन, जिम्मेदारी, अपेक्षाओं को पहचान सकते हैं।
- जीवन विद्या के अनुसार हर व्यक्ति समझदारी के आधार पर जी सकता है; समझदारी के अभाव में अपनी मान्यता के आधार पर जीता है।
- जीवन विद्या के अनुसार, समझदारी वह है जो स्वयं में व संबंधों में सामंजस्य लाए।
- जीने में यदि सामंजस्य का अभाव है तो समझदारी नहीं है, ऐसे में केवल अनुमान या मान्यता (assumptions) ही जीने का आधार रहता है, और इसकी जांच होनी ज़रूरी है। मान्यताओं से जानने की जो यात्रा ही सही मानों में शिक्षा है।

- जीवन विद्या को समझने में प्रयासरत साथियों में धीरे-धीरे सामंजस्य पूर्ण जीवन शैली की दृष्टि विकसित होते देखा गया है।

जीवन विद्या परिचय शिविर क्या है?

- 7-दिवसीय निवासीय शिविर
- 1 या 2 प्रबोधक शिविरार्थियों के सामने जीवन विद्या के प्रस्ताव को जांचने के लिए प्रस्तुत करेंगे
- प्रतिभागी के सभी स्पष्टीकरण (clarifications) का स्वागत है और उन्हें संबोधित किया जायेगा।
- यह शिविर करो-ना करो से मुक्त है, यानि इसमें उपदेश नहीं है।
- यह किसी धर्म, सम्प्रदाय से संबंध नहीं रखता।
- सामान्यतः 6 घंटे प्रतिदिन के सत्र होते हैं। इसलिए प्रतिभागियों इसके लिए मानसिक रूप से तैयार रहें।
- औपचारिक सत्र के अलावा अनौपचारिक संवाद भी होते रहते हैं।
- इस शिविर के लिए कोई कड़ी नियमावली नहीं है। प्रतिभागियों से अपेक्षा रखते हैं कि वे सभ्य, शिष्ट व सहयोगी हों। जिससे सीखना, समझने का माहौल बना रहे।
- इस कोर्स का कोई शुल्क नहीं है। यह एक दूसरे के साथ सुखपूर्वक साझा करने के लिए है।
- भोजन और आवास का शुल्क है। भोजन साधारण शाकाहारी रहेगा।

(this section taken from invite by ashok gopala)